International Journal of Jyotish Research: 2020; 5(2): 05-09

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2020; 5(2): 05-09
© 2020 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 05-09-2020
Accepted: 08-10-2020

निधि मोहन कटियार
शोध छात्रा, ज्योतिर्विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
निधि मोहन कटियार
शोध छात्रा, ज्योतिर्विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

द्वादश राशियों की समीक्षात्मक विवेचन

निधि मोहन कटियार

प्रस्तावना

पृथ्वी पर बनी अक्षांश व देशान्तर रेखाओं के समान, सूर्य पथ को भचक्र (वकपंब) मानकर, उसके चारों ओर 360° का एक कल्पित वृत बनाकर, धरती के आकाश मण्डल में एक आभासीय पथ का निर्धारण किया गया है। आकाश में स्थित भचक्र में 360° अथवा 108 भाग होते हैं। समस्त भचक्र 12 राशियों में विभक्त है। अतः 30° अथवा 9 भाग की एक राशि होती है।

भचक्र को ही राशिचक्र कहते हैं। राशि शब्द का अर्थ है ढेर अथवा समूह। चूंकि राशिया, नक्षत्र समूहों से निर्मित होती हैं, इसलिए इन्हें राशि कहते है। राशि या राशिचक्र को समझने के लिए नक्षत्रों पर प्रकाश डालना आवश्यक है। आकाशमण्डल के आभासीय पथ पर आने वाले तारा समूहों को 27 भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक तारा समूह एक नक्षत्र है और प्रत्येक नक्षत्र के चार–चार चरण हैं। यानि इस आभासीय पथ से 27 नक्षत्र एक के बाद एक गुज़रते जाते हैं। इन 27 नक्षत्रों को 12 भागों में विभाजित कर दिया गया है। ये 12 भाग ही राशियां कहलाती हैं। यदि हम 27 नक्षत्रों को 360° में विभाजित करें तो प्रत्येक नक्षत्र 13°20श का होता है और यदि हम 12 राशियों को 360° में विभाजित करें तो प्रत्येक राशि 30° की होती है। राशिचक्र में पहला नक्षत्र है अश्विनी नक्षत्र, इसीलिए इसे पहला तारा भी कहते हैं। इसके बाद है भरणी नक्षत्र फिर कृतिका आदि 27 नक्षत्र होते हैं। पहले 3 नक्षत्र यानि अश्विनी, भरणी और कृतिका (प्रथम चरण) से मेष राशि का निर्माण होता है। तात्पर्य यह है कि एक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं। नक्षत्र का प्रत्येक चरण 3°20' का होता है।

राशि को अंग्रेजी में sign कहते हैं। sign का अर्थ है निशान अथवा चिह्न। जो वस्तुएं हम भू–मण्डल पर देखते हैं उन्हीं के अनुसार आकृतियां आकाश में तारों से बनी हुई प्रतीत हुईं तो उन्हें वैसा ही नाम हमारे प्राचीन मनीषियों ने दे दिया। यह बात अनुभव से आई है और यह अनुभव हज़ारों वर्षों का है कि राशि के नाम या आकृति के अनुसार उसके गुण भी होते हैं।

इस प्रकार 12 राशियों का विस्तार 360° निर्धारित किया गया है तथा प्रत्येक राशि का विस्तार 30° निर्धारित किया गया है। इसी 360° के क्रान्तिवृत्त में दोनों ओर 9–9° विस्तार की कुल 18° की एक चौड़ी पट्टी (Belt) है, जिसे भचक्र कहते हैं। इस भचक्र पर सभी ग्रह, राशि और नक्षत्र बारी–बारी से पूर्व में उदित होकर पश्चिम में अस्त होते हैं अर्थात् इसी 18° की चौड़ी पट्टी के अंदर हमेशा सूर्य, चन्द्र तथा अन्य ग्रह भ्रमण करते दिखाई देते हैं इसी को राशि चक्र कहते हैं। इस राशि चक्र का आरम्भ मेष राशि से माना जाता है। अहोरात्र व राशि चक्र की घड़ियां (60) समान होने के कारण, अहोरात्र बारह राशियों का वाचक है। अहोरात्र यानि बारह राशियों के बारम्बार भ्रमण (कल्प) से समूचा फलित नियंत्रित होता है।

आकृति 1: भचक्र

वेदों में राशि विचार

ऋग्वेद में राशि विचार के बारे में यद्यपि कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता तथापि इस दृष्टि से कुछ मंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण हैं–

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चंक्र परिद्यामृतस्य
आपुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः [1]।।

उक्त मन्त्र में दिन व रात्रि के मिलन के अर्थ में 'मिथुनासो' शब्द का प्रयोग हुआ है। दिन पुल्लिंग है व रात्रि स्त्रीलिंग। पुरूष व स्त्री के संयोग की प्रतीक 'मिथुन' राशि की मूल उत्पत्ति यही 'मिथुनासो' शब्द है। इस मन्त्र में प्रयुक्त 'द्वादशार' शब्द से द्वादश राशियों की कल्पना की जा सकती है। ऋग्वेद में एक दो जगह चक्र शब्द आया है, वह भी राशि चक्र का बोधक कहा जा सकता है।

द्वादश प्रद्यश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि कं उ तच्चिकेत [2]।

प्रस्तुत मंत्र में 360° का स्पष्ट उल्लेख है तथा उसमें न्यूनाधिक परिवर्तन की गुंजाइश का कोई स्थान नहीं है। इस दृष्टि से द्वादशार का अर्थ बारह राशियों के चक्र से लेने से अर्थ एक दम सटीक बैठता है, क्योंकि प्रत्येक राशि 30° की होती है और बारह राशियों का 360° का चक्र 360 दिनों में पूरा होता है। छान्दोन्य उपनिषद में विषयों की सूची में 'राशि' शब्द का उल्लेख मिलता है किन्तु यह प्रयोग गणित संख्यात्मक है।

स्पष्ट आगम प्रमाण के अभाव में भी युक्ति द्वारा इतना तो मानना ही पड़ेगा कि आकाश मण्डल का राशि एक स्थूल अवयव और नक्षत्र सूक्ष्म अवयव है। जब भारतीयों ने सौर जगत् के सूक्ष्म अवयव नक्षत्रों का इतनी गम्भीरता के साथ विचार किया था, तब क्या वे स्थूलावयव राशि के बारे में कुछ भी विचार नहीं करते होंगे? साधारणतः बुद्धि द्वारा इस प्रश्न का उत्तर यही मिलेगा कि प्राचीन भारतीयों ने जहाँ सूक्ष्म अवयव नक्षत्रों को साहित्यिक मूर्तिमान् रूप प्रदान किया है, वहाँ स्थूल अवयव राशियों को भी अवश्य साहित्य का मूर्तिमान् रूप प्रदान किया होगा। एक दूसरी बात यह भी है कि आज हमारा प्राचीन साहित्य उपलब्ध भी नहीं है। सम्भवतः जिस ग्रन्थ में राशियों का विवेचन किया गया हो, वह ग्रन्थ नष्ट हो गया हो या किसी प्राचीन ग्रन्थागार में पड़ा अन्वेषकों की बाट जोह रहा हो। कोई भी निष्पक्ष ज्योतिष का विद्वान् उदयकाल के अन्य ज्योतिष–सिद्धान्तों के विवरणों को देखकर यह मानने को तैयार नहीं होगा कि उस काल में राशियों का प्रचार नहीं था अथवा भारतीय लोग राशिज्ञान से अपरिचित थे। आदिकालीन वेदांग–ज्योतिष और ज्योतिष्करण्डक में लग्न का सुस्पष्ट वर्णन है। कुछ लोग चाहे उसे नक्षत्र–लग्न मानें या चाहे राशिलग्न, पर इतना तो मानने के लिए बाध्य होना पड़ेगा कि उदयकाल में राशियों का प्रचार था। साहित्य के अभाव में राशियों के ज्ञान के अभाव को नहीं स्वीकार किया जा सकता है।

विभिन्न जातक ग्रन्थों में राशि विचार

भारतीय ज्योतिष के अन्तर्गत, विभिन्न जातक ग्रंथों में निर्विवाद रूप से 12 राशियां स्वीकार की गयी हैं। बराहमिहिर, पाराशर, वैद्यनाथ, वेंकटेश शर्मा, कल्याण वर्मा, नीलकण्ठ, जीवनाथ, जैमिनि, मन्त्रेश्वर तथा अब्दुर्रहीम खानखाना कृत क्रमशः होराशास्त्र (बृहज्जातक), पाराशर होराशास्त्र, जातक परिजात, सर्वार्थ चिन्तामाणि, सारावली, ताजिक नीलकण्ठी, भावकुतूहल, जैमिनि सूत्रम्, फलदीपिका तथा खेटकौतुकम् सहित अन्यान्य होराशास्त्र विषयक ग्रन्थों में 12 राशियों के नाम निर्विवाद रूप से निम्नवत् स्वीकार किये गये हैं–

1. मेष 2. वृष 3. मिथुन
4. कर्क 5. सिंह 6. कन्या
7. तुला 8. वृश्चिक 9. धनु
10.मकर 11. कुम्भ 12. मीन

उक्त राशियों को उनकी क्रम संख्या के अंको से व्यक्त किया जाता है, जैसे 1 अंक का तात्पर्य है–मेष राशि। मेरे विचार से ऐसा राशियों के नाम को संक्षिप्त करने के लिए तथा सुविधा हेतु किया गया है। पाराशर होराशास्त्र में 12 राशियों के नाम इस प्रकार वर्णित हैं–

मेषोवृषश्च मिथुनः कर्कसिंह कुमारिकाः ।
तुलाली च धनुर्नक्रे कुम्भो मीनस्ततः परम् [3] ।।

सारावली में आचार्य कल्याण वर्मा ने 12 राशियों का नामकरण निम्नवत् प्रदर्शित किया है–

मेषवृषमिथुन कर्कटसिंहाः कन्या तुलाऽथ वृश्चिककः।
धन्वी मकरः कुम्भो मीनस्त्विति राशिनामानि [4] ।।

आकृति 2: होराशास्त्र में वर्णित कालपुरूष का अंग विभाग

कालांगानि वरांगमानन मुरो हृत्क्रोड़वासो भृतो,
बस्तिव्यंजनमूरूजानुयुगले जंघे ततोऽंगिघ्रद्वयम्।
मेषाश्विप्रथमा नवर्क्ष चरणाश्चक्रस्थिता राश्यो
राशिक्षेत्रगृहर्क्षभानि भवनं चैकार्थसम्प्रत्यये [5]।।

समस्त ब्रह्माण्ड रूपी विराट परमेश्वर का व्यक्त स्वरूप भचक्र या राशि चक्र कहलाता है। उसी काल पुरुष के अंगों का विभाग बताया जा रहा है। नौ–नौ नक्षत्र चरणों वाली प्रत्येक मेषादि राशि क्रमशः कालपुरुष के सिर–प्रभृति अंगों की प्रतिनिधि है। मेषादि राशियों में प्रत्येक राशि नौ–नौ चरणों वाली या सवा दो नक्षत्रों से युक्त होती है। इस प्रकार अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्र समस्त राशि चक्र में व्याप्त हैं। मेष राशि मस्तक (वरांग), वृष राशि मुख, मिथुन राशि छाती, कर्क राशि हृदय प्रदेश, सिंह राशि पेट (क्रोड), कन्या राशि कमर (वासोभृत्), तुला राशि नाभि व लिंग के मध्य वाला भाग अर्थात् पेडू (बस्ति), वृश्चिक राशि लिंगादि गुप्तांग, धनुराशि जाँघ, मकर राशि दोनों घुटने, कुम्भ राशि पिण्डलियाँ एवं मीन राशि पांवों की प्रतिनिधि है।

काल पुरूष के अंग विभाग को निम्न तालिका के माध्यम से भी समझा जा सकता है–

अंग	राशि	अंग	राशि
मस्तक	मेष	नाभि	तुला
मुख	वृष	लिंग	वृश्कि
छाती	मिथुन	डरू	धनु
हृदय	कर्क	जंघा	म्कर
पेट	सिंह	घुटना	कुम्भ
कटि	कन्या	पैर	मैन

राशि, क्षेत्र, गृह, ऋक्ष, भ, ये पाँचों शब्द भवन अर्थात् राशि या भाव के पर्यायवाची हैं।
रुद्रभट्ट कहते हैं कि अश्विनी नक्षत्र से प्रारम्भ होने का उल्लेख करने के पीछे प्रयोजन यह है कि कृत्तिका या धनिष्ठा से चक्र का प्रारम्भ होने का सन्देह न हो। इससे प्रतीत होता है कि राशि चक्र का प्रारम्भ बिन्दु सदैव से अश्विनी नक्षत्रारम्भ को ही नहीं माना जाता रहा है।

श्नक्षत्राणां कादाचित्कयोर्धनिष्ठादित्व कृत्तिकादित्वयोर्व्युदासाय अश्विप्रथमत्वमुक्तम्।'

ऐसा कहना उपयुक्त ही है क्योंकि वैदिक काल में कृत्तिका नक्षत्र से ही गणना की जाती थी। शंकर बालकृष्ण दीक्षित जी ने उल्लेख किया है कि चीन में भी किसी समय कृत्तिकारम्भ से ही गणना होती रही थी। वेदांग ज्योतिष के विवेचन में धनिष्ठारम्भ से चक्र की प्रवृत्ति मानने का भी आधार स्पष्ट है। ऐसा अयन चलन के कारण सम्भव होता है।
'चक्रस्थिताः' शब्द की व्याख्या करते हुए रुद्रभट्ट लिखते हैं कि चक्र दो प्रकार का होता है–स्थिर व चल। स्थिर चक्र प्रश्नादि विचार में आरूढ़ चक्रादि को कहते हैं तथा चर चक्र स्थानीय पूर्वीय क्षितिज पर उदित होने वाली राशि से निर्मित होता है। इसका प्रयोजन जातक या प्रश्न में लग्न ज्ञान करना है। नौ चरणों का उल्लेख करके वराहमिहिर ने नवांश की प्रधानता को भी रेखांकित कर दिया है, क्योंकि नवांश का मान भी नक्षत्र के एक चरण मान के बराबर अर्थात् 3°20श ही होता है।
भट्टोत्पल ने चक्र शब्द से ऐसा आशय भी माना है कि सारी राशियां, चक्र या पहिए के आकार में स्थित होने के कारण आचार्य ने इस शब्द के द्वारा राशियों के आकाश संस्थान का स्वरूप बता दिया है।
राशि, क्षेत्र, गृह, ऋक्ष व भ ये पाँचों शब्द होराशास्त्र में राशि के ही पर्याय हैं। अतः ऋक्ष व भ का अर्थ नक्षत्र होते हुए भी सर्वत्र राशि रूप में ही ग्रहण करना चाहिए। अतः आचार्य ने राश्यादि पांच शब्दो को 'एकार्थसम्प्रत्यय' अर्थात् एक ही अर्थ का सम्प्रत्यय (बोध) कराने वाले कहा है। सारावलीकार ने कहा है–

ऋक्षं भवननामानि राशिः क्षेत्रं भमेव वा।
उक्तानि पूर्वमुनिभिस्तुल्यार्थ प्रतिपत्तये [6]।।

ऋक्ष, राशि क्षेत्र, भवन ये सब नाम राशि के लिए भी पूर्व मुनियों ने कहे हैं। इसमें समान अर्थ का ही बोध हेाता है। सारावली के इस विवेचन पर बृहज्जातक का प्रभाव बिल्कुल स्पष्ट झलकता है।
जातक पारिजात में भी भावसाम्य दृष्टव्य है–

'क्षेत्रर्क्षराशि भवनानि भ संज्ञितानि [7]।।'

काल पुरुष के अंग विभाग को और अधिक स्पष्ट करते हैं। मेष का आधिपत्य मस्तक अर्थात् सम्पूर्ण कपाल या खोपड़ी पर है। वृष राशि मुख स्थान से कण्ठ तक आधिपत्य रखती है। कण्ठ से नीचे दोनों कन्धों सहित, हृदय से ऊपर का भाग मिथुन के अधीन है। हृदय व नाभिं का मध्य भाग सिंह के अधीन एवं नाभि से नीचे बस्ति या पेडू से ऊपर का भाग, जिसमें वास अर्थात् कपड़ा बाँधा जाता है, कन्या के नियन्त्रण में है। इससे पेटी, कमर बन्द, बेल्ट आदि बाँधने के स्थान का ग्रहण है। तुला राशि नाभि से थोड़ा नीचे तथा लिंगादि से ऊपर के भाग की अधिपति है अर्थात् लिंग व नाभि के बीच वाले भाग को दो भागों में बाँटने से ऊपर का भाग कन्या तथा नीचे का भाग तुला प्रदेश है। लिंग व गुदा प्रदेश तथा उस सीध में पड़ने वाला सम्पूर्ण नितम्ब भाग वृश्चिक राशि का स्थान है। तत्पश्चात् घुटने के ऊपर जाँघ (ऊरू) धनुराशि, दोनों घुटने मकर, दोनों पिण्डलियाँ टखने तक कुम्भ एवं शेष भाग मीन राशि के आधिपत्य में है। यही रुद्रभट्ट के मत में स्थिर राशि चक्र है। प्रश्न के समय वक्ता जिस अंग को छुए, उस स्थान की राशि को लग्न मानकर फल कहने की परिपाटी दक्षिण भारत में प्रचलित थी, ऐसा प्रतीत होता है। प्रचलित रीति में नष्ट जातक में वक्ता या पृच्छक जिस राशि प्रदेश का स्पर्श करते हुए प्रश्न करे, उसे जन्म लग्न मानने का विधान है। स्वयं बराहमिहिर ने आगे नष्ट जातक प्रसंग में श्अंगालभनादिभिर्वाश कहकर इसी बात की पुष्टि की है। तदतिरिक्त जन्म समय में जो राशि पाप पीड़ित या कमज़ोर हो, उसी अंग में जातक को आघात, विकार या निर्बलता होती है। शुभ ग्रह युक्त राशि वाला अंग पुष्ट होता है। जैसा कि आचार्य ने लघुजातक में कहा है–

कालनरस्यावयवान् पुरूषाणां चिन्तयेत् प्रसवकाले।
सदसद्ग्रह संयोगात् पुष्टाः सोपद्रवास्ते च [8]।।

कल्याण वर्मा कृत सारावली नामक जातक ग्रन्थ में भी काल पुरूष के अंग विभाग से सम्बन्धित उक्त विवरण से भाव साम्य् स्पष्ट परिलक्षित होता है। कल्याण वर्मा ने सारावली में बराहमिहिर एवं पाराशर के समान ही कालपुरूष का अंग विभाग निम्नवत् स्वीकार किया है–

शीर्षास्यबाहृदयं जठरं कटिबस्तिमेहनोरूयुगम् ।
जानू जंघे चरणौ कालयांगगानि राशयोऽजाद्याः [9]।।

ज्योतिष पितामह महर्षि पाराशर ने अपने ग्रंथ बृहत् पाराशर होराशास्त्रम् में काल पुरूष के अंग विभाग का वर्णन बराहमिहिर के समान इस प्रकार किया है–

शीर्षाननौतथा बाहूहृत्क्रोडकटिबस्तयः।
गुह्योरूजानुयुग्मे वै युगले जंघके तथा।।
चरणौ द्वौ तथा लग्नाज्ज्ञेया शीर्षादयः क्रमात् [10]।

अर्थात् मेषादि बारह राशियां कालपुरूष अव्यक्त विष्णु के क्रमशः सिर, मुख, भुजा, हृदय, पेट, कटि, वास्ति, गुप्तांग, जाँघे, घुटने, पिण्डलियां व पैर हैं।
श्री वैद्यनाथ विरचित जातक पारिजात में मिथुन राशि के अंग को छोड़कर काल पुरूष के शेष अंग विभाग उपरोक्त विद्वानत्रय द्वारा वर्णित अंगो के ही समान है–

कालात्मकस्य च शिरोमुखदेशवक्षो
हृत्कुक्षिभागकटिवस्तिरहस्यदेशाः।
ऊरू च जानुयुगलं परतस्तु जंघे
पादद्वयं क्रियमुखावयवाः क्रमेण [11]।।

बराहादि ने मिथुन को कन्धों में भी बताया है जबकि वैद्यनाथ वक्षस्थल, छाती में मिथुन का स्थान कहते हैं। यहाँ विरोध दिखता है। लेकिन गर्दन से लेकर पेट के आरम्भ बिन्दु तक के शरीर प्रदेश के दो बराबर भाग करने पर, ऊपर वाला आधा भाग मिथुन के अधीन है यह तथ्य है। उस भाग में कन्धे, छाती आदि सभी संग्रहीत होते हैं। ''नामैकदेशेननाम ग्रहण'' न्याय से कन्धा कहें या वक्ष कहें, शरीरांग एक ही है।
आचार्य मन्त्रेश्वर ने फलदीपिका में वैद्यनाथ के समान ही मिथुन का अंग छाती माना है। शेष अंग विभाग समान है।
आचार्य बराहमिहिर ने अपने जातक ग्रन्थ लघुजातकम् में भी काल पुरूष के अंगविभाग, होराशास्त्र (बृहज्जातक) के समान ही बताये हैं–

शीर्षमुखबाहुहृदयोदरणि कटिबस्तिगुह्यसंज्ञानि।
ऊरू जानू जंघे चरणाविति राशयोऽजाद्याः [12]।।

आकृति 3.

आचार्य नीलकण्ठ विरचित ताजिक नीलकण्ठी, वेंकटेश शर्मा विरचित सवार्थ चिन्तामणि, श्री जीवनाथ विरचित भावकुतुहल तथा नवाब अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना कृत अरबी फारसी तथा संस्कृत पद मिश्रित ज्योतिष ग्रंथ खेटकौतुकम् इत्यादि में काल पुरूष के अंगविभाग का कोई वर्णन प्राप्त नहीं होता है।

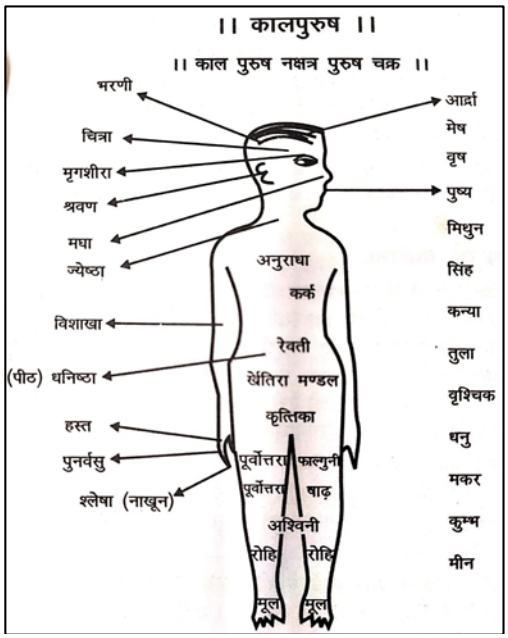

आकृति 4: काल पुरुष नक्षत्र पुरुष चक्र

आचार्य ने कालपुरूष के शरीर में राशियों के न्यास के उपरान्त राशियों के अनुसार ही नक्षत्रों की ततत् अंगो की कल्पना की है। कल्पित मानव शरीर–जैसे मेष राशि सिर में रहने से अश्विनी, भरणी व कृतिका का प्रथम चरण सिर में माना जायेगा। भट्टोत्पल ने इसकी इस प्रकार व्याख्या की है–

'नक्षत्र मानवको राशिपुरूषः कालांगानीत्यादिना प्रदर्शितः।'

राशियों का आकार एवं स्वरूप

मत्स्यौ घटी नृमिथुनं सगंद सवीणं,
चापी नरोऽश्वजघनो मकरो मृगास्यः।
तौलीससस्यदहना प्लवगा च कन्या,
शेषाः स्वनामसदृशाः स्वचराश्चसर्वे [13]।।

आचार्य बराहमिहिर के अनुसार मेष राशि का स्वरूप मेंढ़े अर्थात् नर भेड़ के समान, वृष राशि की आकृति बैल के सदृश, मिथुन राशि नृमिथुन अर्थात् नर व नारी जोड़े के समान प्रतीत होती है, जिसमें पुरूष के हाथ में गदा तथा स्त्री के हाथ में वीणा है।
कर्क राशि का स्वरूप केंकड़े के समान, सिंह राशि का स्वरूप शेर की तरह तथा कन्या राशि का स्वरूप ऐसी बालिका के सदृश है जिसके हाथों में क्रमशः अग्नि एवं अन्न है तथा वह नाव पर बैठ कर मानो यात्रा कर रही है।
तुला राशि का स्वरूप तराजू हाथ में लिए पुरूष (तौली) के समान है, वृश्चिक बिच्छू के समान रूप वाली तथा धनु राशि का स्वरूप धनुर्धर पुरूष (चापी) के समान है जिसका धड़ पुरूषाकार तथा जघन अर्थात् कटि प्रदेश से नीचे का भाग घोड़े के समान है।
मकर राशि मगरमच्छ की आकृति वाली है लेकिन उस मगरमच्छ का मुख हिरण के मुख के समान दिखता है। कुंभ राशि का स्वरूप घड़ा धारण किये हुए पुरूष (घटी) के समान प्रतीत होता है। मीन राशि का आकार दो मछलियों के आकार के समान है, मानो वे दो मछलियॉ एक–दूसरे के मुख व पुच्छ भाग को पकड़े हुए हो।
राशि स्वरूपाकृति की कल्पना भारतीय एसं पाश्चात्य ज्योतिष की अनुपम देन है। आकाश में विचरणीय राशि के प्रदेश में पड़ने वाले तारों को यदि रेखाओं द्वारा मिलाया जायें तो आकृतियॉ बनती सी प्रतीत होती है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि आकाश में मेंढ़े या बैल स्वयं स्थित हो। दूरवीक्षण यन्त्रों द्वारा देखने से तारा संस्थान में कल्पना में उत्पन्न होने वाला राशि स्वरूप पौर्वात्य व पाश्चात्य सभी खगोलज्ञों को समान ही प्रतीत हुआ।
अन्तर केवल यह है कि भारतीयों ने जहॉ सम्पूर्ण जीवाकृति की कल्पना कर ली, वहॉ पाश्चात्यों ने केवल सम्बद्ध जीवादि के अंग विशेष की ही आकृति मानी है। अंग्रेजी विधि में मेषादि राशियों को हम भारतीयों की तरह 2–3–4 आदि अंको से द्योतित नहीं करके, आकाश संस्थित राशि चिन्हों से ही द्योतित किया जाता है। भारतीय ज्योतिष में रिक्त घट को कन्धे पर धारण किये हुए पुरूष का आकार कुम्भ राशि का स्वरूप माना गया है, जबकि पश्चिमी विद्वनों ने जलतरंग का आकार देकर बहते हुए पानी की कल्पना की है।

राशिनाम	चिन्ह	विवरण
मेष		मेंढ़े के सींगों की आकृति
वृष		बैल के सींगों की आकृति
मिथुन		परस्पर आलिंगनबद्ध स्त्री-पुरुष
कर्क		केकड़ा
सिंह		सिंह की पूँछ की आकृति
कन्या		योनि सदृश आकार
तुला		तराजू का आकार
वृश्चिक		उठे डंक वाला बिच्छू
धनु		तीर
मकर		हिरण की आकृति
कुम्भ		घड़े से गिरता हुआ पानी
मीन		दो मछलियाँ

आकृति 4:

रूद्रभट्ट ने एक और विशेष बात बताई है, होराशास्त्र के चतुर्थ श्लोक 'मेषाश्विप्रथमा' में राशि चक्र का प्रारम्भ अश्विनी नक्षत्र व मेष राशि से कहकर आचार्य बराहमिहिर ने अगले ही श्लोक में 'मत्स्यौ' अर्थात् मीन राशि का ग्रहण पहले कर लिया है। यह निष्प्रयोजन नहीं, अपितु बारहवीं राशि अर्थात् जन्म लग्न से द्वादश राशि से पूर्व जन्म का विवेक करना चाहिए, ऐसा गूढ़ आशय आचार्य का है–

''तत्र मेषराशेः यूर्वस्य मीनराशेः प्रथम ग्रहणाद् व्ययराशिना
पूर्वजन्म विवेक इति सूचितम्।।''

सारावलीकार द्वारा वर्णित राशियों का स्वरूप दृष्टव्य है–

''कुम्भः कुम्भकरो नरोऽथ मिथुनं वीणागदाभृन्नरो
मीनौ मीनयुगं धनुश्च सधनुः पश्चाच्छरीरो हयः।
एणास्यो मकरः प्रदीपसहिता कन्या च नौसंस्थिता
शेषो राशिगणः स्वनाम सदृशो धत्ते तुलाभृत्तुलाम् [14]।।

इस प्रकार जातक पारिजात, सर्वार्थ चिन्तामणि तथा सारावली में राशियों के स्वरूप को बराहमिहिर के होराशास्त्र में वर्णित स्वरूप के समान ही बताया गया है। वास्तव में राशियों का उक्त स्वरूप सम्पूर्ण भारतीय ज्योतिष में एकमत से स्वीकार किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्वादशारं .....तस्थुः – ऋग्वेद – 1.164.11
2. द्वादश.....तच्चिकेत..... ऋग्वेद – 1.164.49
3. मेषोवृषश्च .....परम् – वृहत्पराशरहोराशास्त्र – श्लोक संख्या –3
4. मेषवृषमिथुन.....नामानि – सारावली – श्लोक 3
5. कालांगानि .... प्रत्यये – वृहज्जातकम् – श्लोक 4
6. ऋक्षं .....प्रतिपत्तये – सारावली – श्लोक 8
7. क्षेत्रर्क्ष राशि.....संज्ञितानि – जातकपारिजात – श्लोक 7
8. काल..... वास्ते च – लघुजातकम – श्लोक 5
9. शीर्षास्य .....जाद्याः – सारावली – श्लोक 5
10. शीर्षाननौ .....क्रमात् – वृहत्पराशरहोराशास्त्र – श्लोक 4
11. कालात्मकस्य .....क्रमेण – जातकपारिजात – श्लोक 8
12. शीर्षमुख – जाद्याः – लघुजातकम् – श्लोक 4
13. मत्स्यौ ..... सर्वे – वृहज्जातकम् – श्लोक 5
14. कुम्भः .....तुलाम् – सारावली – श्लोक 4